

आर्थिक भूगोल की परिभाषा एवं विषय-क्षेत्र

[DEFINITION AND SCOPE OF ECONOMIC GEOGRAPHY]

आर्थिक भूगोल मानव भूगोल की वह महत्वपूर्ण शाखा है, जिसके अन्तर्गत पृथ्वी के धरातल पर निवास करने वाले मानव की आर्थिक क्रियाओं और उनकी क्षेत्रीय भिन्नताओं और विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त मानवीय क्रियाओं के स्थानिक वितरण अर्थात् उनकी अवस्थितियों तथा सम्बन्धों का अध्ययन भी इसके अन्तर्गत किया जाता है।

इस विश्व का समाज, संस्कृति एवं सम्पूर्ण व्यवस्था में चाहे वह विकसित देशों की हो या विकासशील एवं स्वल्प विकसित देशों की, सभी में भौतिकवाद का गहराई तक प्रभाव स्पष्टतः दिखाई देता है। इसी से अर्थतन्त्र, आर्थिक प्रक्रियाओं के विविध स्वरूपों एवं घटकों की महत्ता को समझा जा सकता है। यह सभी तथ्य वर्तमान में आर्थिक भूगोल से निकट से जुड़े हुए हैं। अतः “आर्थिक भूगोल, मानव के विविध आर्थिक क्रियाकलापों के बहुआयामी एवं पदानुक्रमी विकास से भूतल पर क्षेत्रों के मध्य ऐसे क्रियाकलापों के कारण मिलने वाली विविधताओं, विषमताओं एवं विभिन्नताओं का अध्ययन है।”

आर्थिक भूगोल की परिभाषाएँ (Definitions of Economic Geography)

कुछ प्रमुख भूगोलवत्ताओं द्वारा प्रस्तुत की गई परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

आधुनिक आर्थिक भूगोल के जनक **चिशोल्म** के अनुसार, “आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत उन सब भौगोलिक परिस्थितियों का वर्णन आता है, जो वस्तुओं की उत्पत्ति, उनके विनिमय एवं स्थानान्तरण पर प्रभाव डालती हैं। आर्थिक भूगोल का महत्व इस बात में है, कि इसके द्वारा किसी प्रदेश के वाणिज्यिक (व्यावसायिक) विकास की दशा का ज्ञान हो जाता है और यह पता चलता है कि उस पर भौगोलिक दशाओं का क्या प्रभाव पड़ता है।”¹

प्रो. शॉ के अनुसार, “आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत इन बातों का अध्ययन किया जाता है, कि किस प्रकार मानव की विभिन्न जीविकोपार्जन क्रियाएँ विश्व के उद्योगों, आधारभूत साधनों और औद्योगिक वस्तुओं की प्राप्ति हेतु किये गए विकास के अनुरूप होती हैं।”²

प्रो. जॉन्स और डार्कनवाल्ड के अनुसार, “आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत मानव के उत्पादक व्यवसायों का अध्ययन किया जाता है। वह इस बात का संकेत करता है, कि क्यों प्रदेश विशेषों में किसी वस्तु का उत्पादन और वहाँ से निर्यात होता है तथा क्यों अन्य प्रदेशों में इनका आयात एवं उपभोग किया जाता है।”³

अलेक्जेंडर जे. डब्ल्यू. के अनुसार, “आर्थिक भूगोल सम्पत्ति के उत्पादक, विनिमय तथा उपयोग से सम्बन्धित मानवीय क्रियाओं के (पृथ्वी के धरातल पर) स्वरूप में पाई जाने वाली क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन है।”⁴

1. “Economic Geography embraces all geographical conditions affecting the production, transport and exchange of commodities. Its chief use is to enable into form some reasonable estimate of the future course of commercial development, so far as that is governed by geographical conditions.” —Chisholm : *Fundamentals of Economic Geography*.
2. “Economic Geography is concerned with problems of making a living, with World industries with basic resources and industrial commodities.” —E. B. Shaw : *Economic Geography*.
3. “Economic Geography deals with the productive occupation and attempts to explain why certain regions are outstanding in the production and exploitation of various articles and why others are significant in the importation and utilisation of these products.” —Prof. Johns & Darkenwald : *Economic Geography*.
4. “Economic Geography is the study of real variations on the Earth surface in man's activities related to producing, exchanging and consuming wealth.” —Alexander, J. W. : *Economic Geography*.

मरफी (R. E. Murphy) के अनुसार, "आर्थिक भूगोल में मनुष्य के जीविकोपार्जन की विधियों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर मिलने वाली समानता एवं विषमता का अध्ययन किया जाता है।"¹

रूडॉल्फ वेटजिन्स (Rudolf Wetgens) के अनुसार, "आर्थिक भूगोल विभिन्न प्रदेशों में पृथ्वी की संसाधनता तथा मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं की अन्योन्य क्रिया का अध्ययन एवं तत्सम्बन्धी सार्थक परिणामों के वितरण की व्याख्या करता है।"

गाट्ज (Gotz) के अनुसार, "आर्थिक भूगोल में विश्व के विभिन्न भागों की उन विशेषताओं का वैज्ञानिक विवेचन किया जाता है, जिनका वस्तुओं के उत्पादन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।"²

डॉ. हंटिंगटन के शब्दों में, "मानव व्यवसाय, मानव दक्षता तथा मानव की आवश्यकताओं (जैसे-कला, धर्म, प्रशासन, शिक्षा एवं सभ्यता) के अन्य पक्षों पर भौगोलिक वातावरण के प्रभाव की सीमा का अध्ययन आर्थिक भूगोल में किया जाता है"

रूरबैक के अनुसार, "आर्थिक भूगोल एक क्षेत्र के आर्थिक जीवन का वर्णन है, जिसके अन्तर्गत भौगोलिक वातावरण के नियन्त्रण या प्रभाव को आर्थिक जन-जीवन पर देखा जा सके।"

अतः उपर्युक्त सभी परिभाषाओं से स्पष्ट होता है, कि आर्थिक भूगोल जीविकोपार्जन की विविध विधियों और उनकी समस्याओं से सम्बन्धित विज्ञान है, जिसमें भूतल के आधारभूत संसाधनों और उनसे सम्बन्धित मानव-क्रियाओं के मध्य पाये जाने वाले क्षेत्रवार व परिवर्तनशील सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, आर्थिक भूगोल मानव द्वारा भूतल के प्राकृतिक संसाधनों के विविध प्रकार से विदोहन से सम्बन्धित विज्ञान है, जिसमें उनके उत्पादन, परिवहन, वितरण और उपयोग का अध्ययन किया जाता है।

अतः संक्षेप में यह कहा जा सकता है, कि आर्थिक भूगोल शान्त व स्थिर अथवा मृत विज्ञान न होकर अन्य भौतिक विज्ञानों की भाँति गतिशील, विकासशील एवं गत्यात्मक (Dynamic) विज्ञान है।

आर्थिक भूगोल की प्रकृति एवं विषय-क्षेत्र

(NATURE AND SCOPE OF ECONOMIC GEOGRAPHY)

पूर्व में दी गई परिभाषाओं से स्पष्ट है, कि आर्थिक भूगोल की प्रकृति विविध, बहुरूपी एवं व्यापक है। इसमें देश एवं काल के अनुसार क्षेत्रवार प्रत्येक बार निरन्तर परिवर्तन आते रहे हैं। इसमें संसाधन उपलब्धि के स्तर एवं उन पर निर्भरता के स्वरूप के अध्ययन का विशेष महत्व रहा है। इसी कारण आर्थिक भूगोल का विषय-क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत मानव की आर्थिक क्रियाओं के वितरण की विवेचना, सम्बन्धित क्षेत्र के भौतिक व सांस्कृतिक वातावरण के विभिन्न स्वरूपों को ध्यान में रखकर की जाती है। इसी आधार पर आर्थिक भूगोल के विषय-क्षेत्र को निम्नलिखित चार वर्गों में रखा जा सकता है—

- (i) किसी देश तथा उसके प्रदेशों की प्राकृतिक दशाएँ तथा प्राकृतिक संसाधन;
- (ii) मानवीय विशेषताओं के मानवीय घनत्व, वितरण आदि विविध पहलू;
- (iii) मानवीय संस्कृति, तकनीक तथा पूँजी;
- (iv) मानव की विभिन्न आर्थिक क्रियाओं के स्थानिक वितरण का अध्ययन तथा उन पर प्राकृतिक संसाधनों तथा प्राकृतिक दशाओं का प्रभाव।

आर्थिक भूगोल में, मानव की आर्थिक क्रियाएँ कब, कहाँ और कैसे होती हैं, इस तथ्य का विश्लेषण किया जाता है। वस्तुतः आर्थिक भूगोल, भूगोल की एक महत्वपूर्ण शाखा है, जिसमें भूगोल की निम्नलिखित पाँच महत्वपूर्ण शाखाएँ सम्मिलित हैं—

आर्थिक भूगोल की प्रमुख शाखाएँ (Important Branches of Economic Geography)

आर्थिक भूगोल के गहन अध्ययन के लिए आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत अग्रलिखित 5 शाखाओं को सम्मिलित किया जाता है।

1. "Economic Geography has to do with similarities and differences from place to place in the ways people make a living." —R. E. Murphy : *An Introduction to Geography*
2. "Economic Geography makes a scientific investigation of nature of World areas in their direct influence on the production of goods." —Gotz

आर्थिक भूगोल की परिभाषा एवं विषय-क्षेत्र

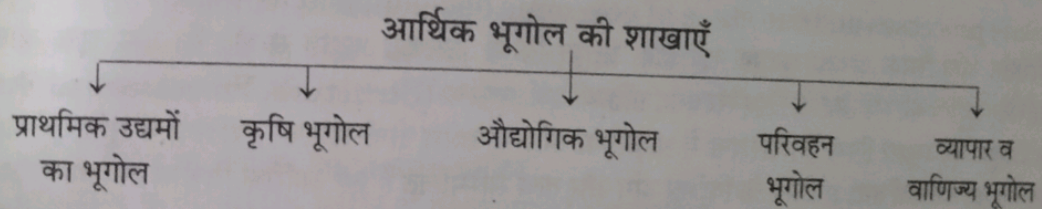
1. प्राथमिक उद्यमों का भूगोल (Geography of Primary Occupations)—शिकार करना, लकड़ी काटना, भोजन संग्रह, पशुचारणता, आदिम मत्स्यपालन तथा प्राचीन पद्धति से किया जाने वाला खनन। कृषि व्यवसाय आर्थिक भूगोल की इस शाखा में सम्मिलित प्रमुख व्यवसाय हैं, जिनके वितरण प्रतिरूप का अध्ययन किया जाता है।

2. कृषि भूगोल (Agricultural Geography)—आर्थिक भूगोल की इस शाखा में कृषि फसलों के अतिरिक्त व्यावसायिक स्तर पर किया जाने वाला मत्स्यपालन, मुर्गीपालन तथा वन उद्यम सम्मिलित होते हैं।

3. औद्योगिक भूगोल (Industrial Geography)—आर्थिक भूगोल की इस शाखा के अन्तर्गत लघु, मध्यम तथा वृहद् स्तर के उद्योगों से जुड़े विभिन्न पक्षों का अध्ययन सम्मिलित होता है।

4. परिवहन भूगोल (Geography of Transportation)—मानव द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले परिवहन के विभिन्न साधनों यथा सड़क मार्ग, रेल मार्ग, वायु मार्ग तथा जलमार्गों का स्थानिक दृष्टिकोण से किया जाने वाला अध्ययन इस शाखा में सम्मिलित होता है।

5. व्यापार व वाणिज्य भूगोल (Geography of Trade and Commerce)—आर्थिक भूगोल की इस शाखा में मानव द्वारा किए जाने वाले व्यापारिक तथा वाणिज्यिक क्रियाकलापों का स्थानिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है।



डॉ. जगदीश सिंह व काशीनाथ सिंह के अनुसार आर्थिक भूगोल का विषय क्षेत्र (Scope of Economic Geography According to Dr. J. Singh And K.N. Singh)

डॉ. जगदीश सिंह तथा काशीनाथ सिंह के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के विषय क्षेत्र में मानव के वे सभी प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक तथा चतुर्थक क्रियाकलाप, जो ठोस रूप से भूसतह पर दृष्टिगोचर होते हैं, सम्मिलित होते हैं। उदाहरण के लिए कृषि, खनन, उद्योग, परिवहन आदि ऐसे आर्थिक कार्य हैं, जो भूसतह पर मूर्तिरूप में दिखाई देते हैं, लेकिन राजस्व व टैक्स प्रणाली आदि ऐसे आर्थिक कार्य जो भूसतह पर दृष्टिगोचर नहीं होते हैं, आर्थिक भूगोल के अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित नहीं होते। वस्तुतः भूसतह पर अपने चिह्न छोड़ने वाले सभी आर्थिक क्रियाकलाप आर्थिक भूगोल का मूलाधार होते हैं।"

डॉ. जगदीश सिंह तथा काशीनाथ सिंह ने आर्थिक भूगोल के विषय क्षेत्र को व्यापक बताते हुए उसके अन्तर्गत मानव-वातावरण तन्त्र परिधि में निम्नलिखित 4 पक्षों को सम्मिलित किया है—

1. विभिन्न आर्थिक तत्वों तथा कार्यों का प्रादेशिक स्तर पर मिलने वाला स्थानिक या भूवैज्ञानिक संगठन प्रतिरूप।
2. तकनीकी विकास के सन्दर्भ में कार्यात्मक संगठन में समायोजन की प्रक्रिया।
3. अन्तर्प्रदेशिक (Inter-Regional) एवं प्रादेशान्तरिक (Inter-regional) अन्तर्क्रिया।
4. उक्त तीनों का पर्यावरण तथा गुणात्मक जीवन स्तर पर पड़ने वाला दीर्घकालीन प्रभाव।

आर्थिक भूगोल की मौलिक संकल्पनाएँ

(FUNDAMENTAL CONCEPTS OF ECONOMIC GEOGRAPHY)

आर्थिक भूगोल की मौलिक संकल्पनाएँ आर्थिक भूगोल का स्वरूप व्यक्त करती हैं। आर्थिक भूगोल की संकल्पनाएँ परस्पर अन्तर्सम्बन्धित एवं गुम्फित सम्मिश्रण (Complex whole) के रूप में विषय को सर्वांगीण स्वरूप प्रदान करती हैं। आर्थिक भूगोल की संकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) आर्थिक भूदृश्यों की संकल्पना (The Concept of Economic Landscape)—इसका उद्भव जर्मन शब्द लैण्डशाफ्ट (Landschaft) से हुआ है। यह आर्थिक भूगोल की आधारभूत संकल्पना है।